छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पंत के काव्य में प्रकृति चित्रण: एक समीक्षात्मक अध्ययन

बीज शब्द : *छायावाद, रोमान्टिसिज्म, प्रकृति, मानवीकरण आदि।*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

हिन्दी साहित्य के इतिहास में सन् 1918 ई. से 1936 ई. तक के समय को छायावाद काल माना गया हैं। छायावाद हिन्दी साहित्य का एक ऐसा युग है, जिसको हम अंग्रेजी साहित्य के 'रोमान्टिसिज्म' काल के साथ जोड़ कर देख सकते है। इस युग में चार बड़े प्रतिभाशाली कवियों का आविर्भाव हुआ- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'। इन कवियों की यहीं विशेषता रही है कि प्रकृति के रहस्यमय जगत को, जिसे दृष्टिपात करने पर नीर्जीवता प्रतीत होती है, उसमें सजीवता का वर्णन किया। या यूँ कहें कि छायावादी कवियों ने प्रकृति का 'मानवीकरण' किया। छायावादी कवि पंत जी ने प्रकृति को जिस रूप वर्णन किया है वह पाठको के लिए वरदान स्वरूप है। कवि ने अपनी जीवन की सम्पूर्ण भावनाओं को कवि कर्म के प्रति समर्पित कर दिया था। प्रकृति के प्रति उनका जो लगाव है वह और कवियों में कम पाया जाता है।

जयन्त कुमार बोरो
(एम.ए, एम. फिल, नेट)
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कोकराझार गवनर्मेन्ट कॉलेज, असम

छायावाद युग को हिन्दी कविता के 'प्रकृति-चित्रण के काव्य का स्वर्ण-युग' कह सकते हैं। हिन्दी साहित्य के जगत में खड़ी बोली भाषा के प्रकृति-चित्रण का स्वर्ण-युग गढ़ने में पंत जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसमें सन्देह नहीं है कि सुमित्रानन्दन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि है। पंत जी का प्रकृति परक काव्य अद्यपर्यन्त खड़ी बोली के सम्पूर्ण प्रकृति काव्य की शिखर छवि है। पंत का प्रकृति बोध केवल रूप-रंग की दृश्य सीमाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि रुप-रंग की सीमाओं को अतिक्रमण करते हुये प्रकृति बोध का सूक्ष्मतर गंध-साधना तक गया था। इसलिए पंत जी द्वारा रचित प्राकृतिक साहचर्य की कविताओं में केवल मौलिक प्रकृति का रूप चित्रण नहीं मिलता, बल्कि उसका भाव चेतन्य भी मिलता है। फलस्वरुप इनके प्रकृति-काव्य में शोभना प्रकृति के रुप और भाव दोनों का रागात्मक समेकन है।[1] हिन्दी की छायावादी कविताओं में प्रकृति का चित्रण बड़ा ही मनोहारी रहा है। कविवर पंत के काव्य में प्रकृति को एक सुन्दरी की मनोहर छवियों के रूप में अंकित किया गया है। पंत जी केवल कल्पना एवं भावनाओं के कवि हैं, अपनी कोमल कल्पना के बल पर ही उन्होंने प्रकृति को ऐसा रूप प्रदान किया, जैसे कि वह हमारे सामने चलने फिरने लगता है। यूँ लगता है कि प्रकृति और पंत एक ही हों।

सुमित्रानन्दन पंत जी प्रकृति के एक कुशल कवि एवं कलाकार है पंत जी की प्रकृतिपरक कविताओं के अध्ययन से पाठक के मन को भी प्रकृति के गोद में ला करके रख देती हैं। प्रकृति मानव जीवन का एक प्रमुख अंग है, प्रकृति विहिन लोक में मानव एक पल के लिए भी नहीं रह सकता। पंत जी का प्रकृति चित्रण लोक शिक्षा का भी काम करता है।

छायावाद का काव्य आधुनिक हिन्दी कविता का सर्वोच्च प्रकृति काव्य है। हमें यह भी स्वीकार करना करना चाहिए कि छायावादी प्रकृति-काव्य को सर्वोच्च बनाने का श्रेय सुमित्रानन्दन पंत ही है।[2] पंत जी का प्रकृति के प्रति विशेष अनुराग रहा है। छायावाद युग के सभी कवियों ने प्रकृति के गोद में क्रीड़ा किया है। प्रसाद जी को छायावाद युग का प्रवर्तक माना गया है। प्रवर्तक का श्रेय इसलिए दिया गया क्योकि सबसे पहले उनकी कविता में ही छायावादी काव्य के लक्षणों को देखा गया। प्रसाद जी का प्रकृतिपरक काव्य भी मनोहारी है, जो पाठको को अपनी ओर अनायास ही खींच लेता है। लेकिन पंत जी को प्रकृति के सुकुमार कवि उपमा जोड़ देने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने प्रकृति को काफी नजदीकी से देखने का प्रयास किया है। प्रकृति ने कवि को अनन्त कल्पनायें, असीम भावनायें एवं असंख्य

सौन्दर्यानुभूतियाँ प्रदान की है। उनको कविता करने करने की प्रेरणा प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण से प्राप्त हुआ है। पंत जी प्रकृति के बाह्य या स्थूल जगत के प्रति ही नही, अपितु सूक्ष्म जगत के प्रति भी काफी आकर्षित थे। पंत जी का प्रकृति निरीक्षण और प्रकृति के प्रति अनन्य प्रेम उनके जीवन के स्वभाव का अंग बन कर रह गये थे। एक तरह से वे अपने को प्रकृति के गोद में ही विचरण करते हुये पाते थे, इसलिए कवि पंत को प्रकृति से अलग करके नहीं देखा जा सकता। उनकी कविताओं में प्रकृति का रूप-रंग इतना भास्वर है कि उसके आगे नारी की सौन्दर्य भी तुच्छ हो जाता है:

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल जाल में कैसे उलझा दू लोचन?
भूल अभी से इस जग को![3]

उन्होंने हमेशा ही प्रकृति के कोमल एवं सुकुमार रूप रंग को अधिक स्थान दिया है। प्रकृति का रंग उनके जीवन के राग-द्वेष के साथ सम्मिलित होकर अंगीकार हो गया है। पंत की सम्पूर्ण कविता का मेरुदण्ड उनकी उर्वरा कल्पना शक्ति है। पंत कोमल एवं सुकुमार कल्पना के कवि हैं। उनकी यह कल्पना सर्वथा अजेय, अपराजित, अलौकिक एवं अद्‌भुत है।[4] एक तरह से प्रकृति उनके लिए नवनवोन्मेषशालिनी[5] है और नूतन सृष्टि की विथायनी है।

पंत जी के प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत प्रकृति के विविध उपादानों को चित्रित किया गया है। पंत जी की अनेक कवितायें जैसे- प्रथम रश्मि, एकतारा, गुंजन, परिवर्तन, बादल, हिमाद्रि, नौका-विहार आदि में प्रकृति का आलम्बन रुप में चित्रण किया है, और जहाँ पर प्रकृति में मानवीय भावना को उद्दीप्त करती हुई प्रतीत सी होती है वहाँ पर प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण किया गया है। पंत जी की वीणा ग्रन्थ में संकलित प्रकृति की कविताये विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। क्योंकि वीणा में प्रकृतिपरक कविताओं में कवि और प्रकृति का एक साथ साक्षात् रूप का दर्शन होता है। कारण यहीं है कि वीणा में संकलित कवितायें सन् 1918 ई. से सन् 1920 ई के लगभग अवधि में कूर्माचल के पहाड़ी परिवेश के सान्निध्य में रहकर लिखी गई थीं। इस सम्बन्ध में स्वयं कवि का कहना है कि वीणा की विस्मय-भरी रहस्य-प्रिय बालिका अधिक मांसल, सुरुचि सुरंगपूर्ण बनकर, प्राय: मुग्ध युवती का हृदय पाकर जीवन के प्रति अधिक सम्वेदनशील, होकर पल्लव में प्रकट हुआ है। इस प्रकार प्रकृति की रमणीय वीथिका से होकर ही मैं काव्य के भाव-विशद सौन्दर्य-प्रसाद में प्रवेश पा सका।[6] वीणा में संकलित प्रथम रश्मि कविता कविता शीर्षक से एक उदाहरण द्रष्ट्व्य है:

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि !
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ, हे बाला विहंगिनी!
पाया तूने यह गाना ?[7]
.....
सोई थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर
ऊँघ रहे थे, घूम द्वार पर
प्रहरी से जुगनु नाना
शशि-किरणों के उतर-उतरकर
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिखा रहे थे मुसकाना
स्नेह हीन तारों के दीपक
श्वास- शून्य थे तरु के पात
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में
तम नेथा मंडप ताना।[8]

उक्त कविता के अंश में उन्होने प्रकृति के विविध रूपों एवं उपादानों का चित्रण किया हैं। सूर्य की प्रथम रश्मि का आना, प्रहरी रूपी जुगनुओं का हट जाना, सूर्य के उगते ही नव कलियों का मुख मुसकुराना आदि दृश्य कितना मनोहारी लगता है। पंत ने प्रकृति के चेतन रुप को कविता के माध्यम से सहज रूप से अभिव्यक्त किया है। प्रकृति का मानव जीवन के साथ कितना गहरा सम्बन्ध रहा है, यह पंत जी के काव्य में स्पष्ट झलकता है। सुमित्रानन्दन पंत ने अपने ग्रन्थ पल्लव में संकलित पूर्व-सुधि कविता में बादलों के सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया गया है:-

बादलों के छायामय मेल
घूमते है आँखों में फैल
अवनि औ अंबर के खेल
शैक में जलद- जलद शैल
शिखर पर विचर मरुत रखवाल
वेणु में भरता था जब स्वर
मेमनों-से मेघों के बाल
कुदकते थे प्रमुदित गिरि पर।[9]

कविवर पंत ने प्रकृति के प्रत्येक तत्व को अपनी कलम से अलंकृत किया है। कवि की कविताओं के अध्ययन से यह आभास होता है कि वह प्रकृति का सहचर रहा है। पंत ने पूर्व सुधि में बादलों के सौन्दर्य के साथ-साथ अन्य तत्वों को भी वर्णित किया है। जैसे-

पपीहों की वह पीन पुकार,
निर्झरों की भारी झर-झर
झींगुरों की झीनी झनकार
घनों की गुरु गम्भीर गहर
बिन्दुओं की छनती छनकार
दादुरों के वे दुहरे स्वर।[10]

पपीहों की पुकार, पर्वतों से बहने वाली निर्झरों की झर-झर ध्वनि, झींगुरों और दादुरों का स्वर किसे नहीं मोह लेता। कवि ने अपनी परिवर्तन कविता में प्रकृति के परिवर्तन स्वरूप का भी वर्णन किया है। परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम है और यह होनहार है। पंत जी कहते है कि-

अहे निष्ठुर परिवर्तन
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन
निखिल उत्थान, पतन।[11]

.....

अहे महाबुधि! लहरों-से शत लोक चराचर
क्रीड़ा करते सतत तुम्हारे स्तीफ वक्ष पर
तुंग तरगों से शत युग, शत-शत कल्पांतर
उगल, महोदर में विलीन करते तुम सत्वर
शत सहस्र रवि शशि, असंख्य ग्रह उपग्रह उडुगण
जलते बुझते हैं स्फुलिंग-से तुममें तत्क्षण
अचिर विश्व में अखिल, दिशाबधि, कर्म, वचन, मन
तुम्हीं चिरन्तन
अहे विवर्तन हीन विवर्तन!![12]

कवि पंत ने कविता कर्म के लिए अपनी मानवीय भावनाओं का भी परिष्कार किया है। छायावादी कविता में कल्पना का अधिक सहारा लिया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने कल्पना को भावना कहते हुये लिखा है कि जिस प्रकार भक्ति के लिए उपासना या ध्यान की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार भावों के परिवर्तन के लिए भावना या कल्पना अपेक्षित है।[13] सुमित्रानन्दन पंत के प्रकृति चित्रण में प्रकृति की धड़कन, स्पंदन, कंपन एवं सिहरण की मधुर ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती है, कवि प्रकृति एक सजीव और सचेतन नारी के रुप में कल्पना किया है। वहाँ पर प्रकृति के उत्पीड़न रूप को देखा जा सकता है। संयोग काल में जहाँ प्रकृति सुखद अनुभूति एवं भावनाओं को उद्दीप्त करती है वहीं विरह की अवस्था में वेदना को उद्दीप्त करती है। उनकी कविताओं में जैसे- मधुवन, गुंजन, प्रथम मालन आदि में प्रकृति के उस रूप का वर्णन किया है, जो संयोग के अवसर पर भावों को उद्दीप्त करती है। जैसे-

जननि अंचल में झूल सकाल
मृदुल उर कंपन सी बपुमान
स्नेह सुख में बढ़-बढ़ सखि चिरकाल
दीव की अकलुष शिख समान
कौन सा आलय, नगल विशाल
कर रही तुम दीपित, द्युतिमान
शलभ-चंचल मेरे मन प्राण,
प्रिय, प्राणो की प्राण।[14]

संयोग की अनुभूति में कवि का मन प्राण चंचल हो उठता है। लेकिन वियोग काल में यही प्रकृति वेदना को उद्दीप्त कर पीड़ा को ओर अधिक बढ़ाती है-

विरह है अथवा यह वरदान
कल्पना में है सककती वेदना
अश्रु में जीता, सिसकता गान है,
शून्य आहों में सुरीले छंद हैं,
मधुर लय का क्या कही अवसान है। [15]

प्रकृति के बहाने से ही कवि अपनी वेदना को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। पंत जी प्रत्येक स्थलों पर प्रकृति के ही मनोरम झाकियों को प्रस्तुत करना पसन्द करते हैं। कवि पंत जी ने सांध्या बेला में बाँस के झुरमुटों पर चिड़ियों के चहचहाने को ध्वनियों के द्वारा प्रकट करते हैं। संध्या के समय में बाँस के झुरमुटों में पक्षियों का कलरव कितना आनन्दमय लगता है-

बाँसों का झुरमुट
संध्या का झुटपुट
लो, चहक रही चिड़ियाँ
टी-वी-टी- टुट्-टुट्।[17]

कवि का मन खगों की भाँति गाने को चाहता है। कवि का कवि मन खग सा बन जाना चाहता है, वे लिखते हैं कि

गा सके खगों सा मेरा कवि
विश्री जग की संध्या की छवि
गा सके खगों सा मेरा कवि,
फिर हो प्रभात- फिर आवे रवि ![18]

संध्या बेला के समय को कवि ने रूपसि कहते हुये सम्बोधित किया है और उसका वर्णन किया है-

कहो, तुम रूपसि कौन ?
व्योम से उतर रही चुपचाप

छिपी निज छाया में आप
सुनहला फैला केश कलाप
मधुर, मंथर, मृदु मौन![19]

पश्चिमाकाश में डूबता सूर्य और बढ़ती हुई संध्या बेला एक अलौकिक सा दृश्य जगने लगता है। प्रकृति के इस मनोहारी दृश्य के प्रति हर कोई आकर्षित है। लेकिन कवि तो इसे एक रूपवती स्त्री के रूप में कल्पना कर बैठता है। चुपचाप आकाश से उतरा हुआ यह रूपसि कौन है जो अपने सुनहले केशों को छिने-छिने फैला रहा है, जो एक दम से मौन है। कवि संध्या वर्णन में उसका मानवीकरण[20] किया है। छायावाद के सभी कवियों ने प्रकृति में मानवीकरण को आरोपित कर सौन्दर्य का वातावरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया। कवि ने प्रकृति के विविध रूपों को मानव की भाँति हँसते, रोते और विविध क्रिया कलाप करते दिखाया है। पंत जी की कविताओं जैसे- बादल, संध्या, नौका विहार, चाँदनी आदि में प्रकृति के अचेतन स्थिति पर चेतना का संचार करने का प्रयास किया है। जिसमें कवि को काफी सफलता मिली है। पवित्र गंगा जी को अपनी नौका-विहार कविता में एक तन्वंगी नायिका के समान बालू रूपी शैया पर थककर लेटा हुआ वर्णन किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

शांत, स्निग्ध, ज्योत्सना उज्ज्वल
अपलक अनन्त नीरव भूतल
शैया पर दुग्धधवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रांत, क्लान्त, निश्चल।[21]

तन्वंगी गंगा का और आगे चित्रण करते हुये कवि कहते हैं कि

तापस बाला गंगा निर्मल, शशि-मुख से दीपित मृदुकरतल,
लहरे उस पर कोमल कुन्तल
गोरे अंगो पर सिहर-सिहर लहराता तार-तरल सुन्दर
चंचल अंचल सा नीलाम्बर।[22]

गंगा जिसे सम्पूर्ण भारत की देवी का दर्जा दिया गया है उसका इस प्रकार से वर्णन कोई निष्काम कवि ही कर सकता है निर्मल जल को गौर वदन के रूप में और नीलाम्बर को चंचल आँचल के रूप में चित्रित करना पंत जैसे प्रगल्भ कवि ही कर सकता है। साहित्य जगत में प्रत्येक साहित्यकार का प्रकृति के साथ तादात्मय रहा है। यही तादात्मय छायावादी कवियों में रहस्यवाद की अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इस सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने छायावाद के शब्द प्रयोग के सन्दर्भ में अपने ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के दो महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से होता है अर्थात जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञान प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।[23]

छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धतिविशेष के व्यापक अर्थ में है। सन् 1885 ई. में फ्रॉन्स में रहस्यवादी कवियों का एक दल खड़ा हुआ जो प्रतीकवाद (सिंवालिस्ट्स) कहलाया। वे अपनी रचनाओं में प्रस्तुतों के स्थान पर अधिकतर अप्रस्तुत प्रतीकों को लेकर चलते हैं। इसी से उनकी शैली की ओर लक्ष्य करके प्रतीकवाद शब्द का व्यवहार होने लगा। आध्यात्मिक या ईश्वरीय प्रेम सम्बन्धी कविताओं के अतिरिक्त और सब प्रकार की कविताओं के प्रतीक शैली की ओर वहाँ प्रवृति रही। हिन्दी में छायावाद शब्द का जो व्यापक अर्थ में रहस्यवादी रचनाओं के अतिरिक्त और प्रकार की रचनाओं के सम्बन्ध में भी ग्रहण हुआ वह भी प्रतीक शैली के अर्थ में। छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन। इस शैली के भीतर किसी वस्तु या विषय का वर्णन किया जा सकता है।[24]

शुक्ल जी ने कहा है कि महादेवी वर्मा जी छायावाद के मूल अर्थ को लेकर चलने वाली पहली कवियित्री है। प्रसाद, पंत, निराला आदि ने चित्रात्मकता को शैली से छायावाद में अपने को स्थापित किया है। शुक्ल जी कविता में अभिव्यक्त रहस्यभावना के ज़िज्ञासामूलक को स्वाभाविक मानते हैं। जो पंत जी की कविता के लिए सही प्रतीत होता है। पंत जी की मौन निमंत्रण कविता में इसी बात की ओर इशारा किया गया किया है:-

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान
विश्व की पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अज्ञान
न जाने, नक्षत्रों से कौन
निमन्त्रण देता मुझको मौन[25]

पंत जी की मौन निमन्त्रण कविता इस दृष्टि से उल्लेखनीय है क्योकि उसमें कवि को सर्वत्र उस अज्ञात सत्ता के मौन निमन्त्रण का आभास होता है। जो उन्हे अज्ञात सत्ता की ओर अनायास ही पुकारता चला जाता है:-

देख वसुध का यौवन भार
गूंज उठता है तब मधुमास
विधुर उर के से मृदु उद्‌गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छावास
न जाने, सौरभ के मिस कौन
संदेश मुझे भेजता मौन।[26]

वसन्त ऋतु में पुष्पों का खिलना और उससे निकलने

वाली सुगन्ध के द्वारा भी कवि को अज्ञात सत्ता अपनी ओर आने के लिए संदेश देती है। पंत जी ने प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत कई प्रकार के खगों का भी चित्रण किया हैं। कोयल, पपीहा और कभी कौआ को भी अपना कविता में स्थान देते नजर आते हैं। 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता में कोयल को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। कवि कोयल से यही आशा करता है कि वह सनातन का संदेश लाय, नव गान का सृजन करने को कहता है। जिसका कवि ने मानवीकरण किया है:-

गा, कोकिल, स्वर में कंपन
झरे जाति-कुल-वर्ण-पूर्ण धन
अंध नीड़-से रुढ़ि रीति धन
व्यक्ति राष्ट गल राग-द्वेष रण
झरे, भरे विस्मृति में तत्क्षण।[27]

कवि प्रकृति चित्रण के सहारे मानवीय सम्वेदना को भी प्रकट किया है। पंत सही अर्थों में मानव प्रेमी थे। यह प्रकृति यह सृष्टि मानव के लिए ईश्वर का वरदान है। प्रकृति का विनाश एक प्रकार से मनुष्य की सभ्यता का ही विनाश करना है। पंत जी का प्रकृति चित्रण मानव सभ्यता के प्रति एक लोकशिक्षा की भाँति है। प्रकृति के प्रति मनुष्य का प्रेम स्वाभाविक होना चाहिए। प्रकृति की गोद और माता की गोद दोनों बराबर है, पंत जी की प्रेरणा प्रकृति है। प्रकृति से उनका प्रेम ही उन्हें कविता करने की शक्ति देता है। कवि मनुष्य को ईश्वर के इस वरदान को आनन्दित होकर उपयोग करने की प्रेरणा देता है। इस उपयोग का अभिप्राय दोहन से नहीं है जो आज के लोग करते हैं। कवि प्रकृति के सौन्दर्य से मन को तृप्त करने की बात करते हैं। पंत जी ने सुन्दर शब्दों में अपनी 'मानव' कविता में इसका वर्णन किया है:-

मानव का मानव पर प्रत्यय,
परिचय, मानव का विकास
विज्ञान का अन्वेषण
सब एक, एक सब में प्रकाश
प्रभु का अनन्त वरदान तुम्हे,
उपभोग करो प्रतिक्षण नव-नव,
क्या कभी तुम्हे है त्रिभुवन में
यदि बने रह सको तुम मानव [28]

यह कवि का उदात्त विचार उनके जीवन दर्शन को उजागर करता है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाता है कि कवि गांधी के जीवन दर्शन से भी प्रभावित थे। गांधी जी ने कहा था कि इस पृथ्वी में जितनी भी संपदा है, वे सारे मनुष्यों को सन्तुष्ट करने के लिए पर्याप्त है, परन्तु लोभी व्यक्ति के लिए ऐसा सम्भव नहीं हो सकता। प्रकृति से हमारी सभी इच्छा की पूर्ति सम्भव है। इसलिए पंत ने भी प्रकृति के सौन्दर्य में अपने को संतोष का अनुभव करते हैं। कविवर पंत ने प्रकृति का सम्पूर्ण सौन्दर्य अपनी कविताओं में समेटने का एक स्तुल्त्य प्रयास किया है। वे प्रकृति के कुशल चित्रकार हैं। कुमार विमल का कहना है कि 'पंत जी की प्रकृति कविताएँ इनकी अन्य प्रकार की कविताओं की तुलना से अधिक टिकाऊ होगी। इनकी प्रकृति कविताओं की विषेशता को, जिसका आधार कूर्मांचल, कत्यूर की घाटी, हिमालय और उसके प्रान्तर का सौन्दर्य है, रूप के साहित्य-विवेचकों ने भी लक्षित किया था। इसीलिए जब इनकी चुनी हुई प्रकृति कविताओं के रुसी अनुवाद का संकलन गिमलाइस्कया तेत्राज के नाम से मास्को से सन् 1965 ईस्वी में प्रकाशित हुआ, तब उसके प्रत्येक पृष्ठ को निकोलस रोकिक के हिमालय से सम्बन्धित विभिन्न चित्रों की प्रतिकृति से मंडित कर मुद्रित किया गया। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि पंत की प्रकृति-कविताओं में चित्रकार ब्रस्टर के प्रकृति-चित्रों पर भी विचार किया जाना चाहिए। वयोवृद्ध अमरीकी चित्रकार मिस्टर ब्रस्टर मानों अल्मोड़ा में बस गए थे और उन्होंने यहाँ की पहाड़ियों तथा हिमशिखरों की अनेक रंगमुखर छायाकृतियाँ अंकित की थी, जो पंत को बहुत प्रिय थीं।[29]

पंत जी के प्रकृति चित्रण में अंग्रेजी कवियों जैसे- शैली, वर्ड्सवर्थ, कीटस, टेनीसन- इन चारों रोमांटिक युग के कवियो का प्रभाव दिखता है। पंत जी इन से अधिक प्रभावित थे। पंत जी ने अंग्रेजी साहित्य का अच्छा अध्ययन किया था। अत: उन पर इसकी छाया स्पष्ट झलकती है। पंत जी की प्रसिद्ध कल्पनापूर्ण कविता 'बादल' शैली के 'The Cloud' से काफी हद तक प्रभावित थी। 'बादल' कविता में उनकी भावुकता की प्रखर कल्पना नि:सृत हुई है। इसी कारण बादल में जो विभिन्न चित्र दिखाई दिये गये हैं वे बड़े भव्य और मनोहर हैं। परन्तु पंत जी ने शैली की 'Cloud' कविता का सिर्फ अनुवाद ही करके रख नहीं दिया, बल्कि उसको भारतीय अंदाज में वर्णित करने का प्रयास किया। उनके वर्णन में विदेशी अंदाज का आभास नहीं होता, जबकि वह हमारे चिर परिचित धूम धुँआरे कजरारे बादल ही हैं-

धूम धुँआरे, काजरकारे,
हम ही बिकरारे बादर,
मदन राज के वीर बहादुर,
पावस के उड़ते फणिधरय[30]

पंत जी के काव्य में प्रकृति के प्रत्येक तत्वों का समावेश

किया गया है जो विभिन्न रूपों में आकर्षित करता है। उनकी रचनाओं में छायावादी काल की अनेकोनेक चित्र बिखरे पड़े हैं। यह कभी तो पाठक को महत् आश्चर्य से विस्मित कर देता है और कभी अव्यक्त सौन्दर्य-भावना से पुलकित कर देता है। पंत जी ने अपने जीवन का प्रारम्भ प्रकृति से किया है। यहीं प्रकृति-प्रेम उनकी कविता का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। छायावाद युग के कविता और विचार विश्लेशण में प्रायः रोमांटिसिज्म शब्द का उल्लेख होता आया है। रोमांटिसिज्म अंग्रेजी का शब्द है।[31]

रोमेंटिक कवियों ने भी प्रकृति का चित्रण किया है। किन्तु छायावादी कवियों का प्रकृति चित्रण इनसे भिन्न है। रोमान्टसिज्म से अभिप्राय यह नहीं है कि हम अपनी हिन्दी छायावादी कविता को रोमान्टिसिज्म काल की कविता का प्रभाव माना जाए। हिन्दी छायावादी कविता की भूमि और अंग्रेजी की रोमान्टिसिज्म की अलग है भले ही उसमें अभिव्यक्त भाव एक ही क्यों न हो। हम यह कह दे कि अंग्रेजी का कुछ प्रभाव हिन्दी में दिखता है लेकिन अंग्रेजी कविता का पूरा-पूरा अंधनुकरण नहीं है। छायावादी कविता या रोमान्टिक कविता पूर्ण रूप से व्यक्तिवादी है। लेकिन पंत जी कविता व्यक्ति से समिष्ट की ओर अग्रसर होती हुई कविता है जिसने प्रकृति के साहचर्य में अपने को विकसित किया है।

सन्दर्भ :

1. भूमिका, सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ- 11.
2. गधंवीथी (सुमित्रानन्दन पंत) की भूमिका, लेखक- डॉ. कुमार विमल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 1973 ई., पृष्ठ-46.
3. मोह (कविता से), सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ- 51.
4. सुमित्रानन्दन पंत (हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि), लेखक- डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ- 244.
5. संस्कृत के आचार्य भटौत प्रतिभा को परिभाषित करते हुये कहते है कि- 'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनीं प्रतिभा विदुः। अर्थात् आचार्य भटौत 'नवनवोन्मेषशालिनीं' कहकर जिस प्रज्ञा के स्वरुप को स्थापित करते है उसका अर्थ है सर्वथा नवीन स्फुरण से युक्त प्रज्ञा का वह स्वरुप जो सर्वथा मौलिक वर्णना को प्रस्तुत करे। उद्धत- भारतीय काव्यशास्त्र (प्रतिभा शीर्षक से), लेखक- योगेनेद्र प्रताप सिंह, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ- 89.
6. रश्मिबंध, सुमित्रानन्दन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सस्करण- 1958, परिदर्शन, पृष्ठ- 5.
7. प्रथम रश्मि (वीणा), सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ-39.
8. पल्लव पंत जी का एक काव्य संग्रह है जिसका रचना का सन् 1926 ई. है। इसमे लिखी अपनी भूमिका को छायावाद का मैनिफेस्टों कहाँ जाता है।
9. पूर्व-सुधि (कविता शीर्षक से) सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ-46.
10. वहीं पृष्ठ-46.
11. परिवर्तन (कविता शीर्षक से), सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ- 47.
12. वहीं, पृष्ठ- 48.
13. चिन्तामणि (भाग-1), रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ- 219-220.
14. भावी पत्नी के प्रति (शीर्षक से), सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ- 62.
15. आँसू (शीर्षक से), सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशकः साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ- 48.
16. वहीं, पृष्ठ- 49.
17. बासों का झूरमुट (कविता शीर्षक से), पृष्ठ- 75.
18. वहीं, पृष्ठ- 75.
19. संध्या (कविता शीर्षक से), पृष्ठ- 78.
20. जहाँ किसी वस्तु या भाव में चेतना का आरोप किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। मानवीकरण में प्रकृति के द्वारा मानली क्रिया को आरोप करते हुये दिखाया जाता है। मानवीकरण छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। छायावादी काव्य में मानवीकरण के रुप में प्रकृति-चित्रण की प्रमुखता है, उदाहरण-

धीरे-धीरे उत्तर क्षितिज से,
आ वसन्त रजनी,
तारकमय नव वेणी बन्धन
शीशफूल कर शशि का नूतन।
रश्मि-वलय सित घन-अवगुंठन
मुक्ताहल अभिराम विदा दे

चितवन से अपनी।। कवियत्री- महादेवी वर्मा (यामा से) उद्धृत-

(शेष पृष्ठ 69 पर)